उत्तर पृष्ठ

परमेश्वर की योजना– आपका चुनाव

इन्टरनेशनल कॉरेसपोन्डेन्स इन्स्टीट्यूट

पोस्ट बैग नं० 1, एन्ड्रूज गंज
नई दिल्ली-110049

नीचे दिए रिक्त स्थान में साफ अक्षरों में भरें :

आपका नाम .....

आपका आई.सी.आई. विद्यार्थी क्रमांक .....

आपका पता .....

.....

प्रान्त ..... पिन कोड .....

आयु ..... लिंग ..... धर्म .....

व्यवसाय ..... तिथि .....

महत्त्वपूर्ण

यह आपके 'उत्तर-पृष्ठ' हैं। कृपया इन्हें सावधानीपूर्वक खींचकर बाहर निकाल लें और इन्हें भरकर हमें भेज दीजिए। हम इनको जांचेंगे और फिर आपको एक सुन्दर प्रमाण-पत्र भेजेंगे। और इसके द्वारा हम आपका आगामी पाठ्यक्रम में नामांकन भी कर सकेंगे।

पाठ 1-4

सही या गलत

निम्नलिखित कथन या तो सही हैं या गलत। सही उत्तर के सामने (✓) निशान लगायें।

1. परमेश्वर हमारे कार्य जानता है पर हमारे विचार नहीं।

... अ) सही ... ब) गलत

2. लोगों के लिए परमेश्वर की योजना में विविधता सम्मिलित है।
   ... अ) सही ... ब) गलत
3. लोग दुर्घटनावश या यूं ही मसीही बन जाते हैं।
   ... अ) सही ... ब) गलत
4. स्वर्ग में जाने के पश्चात् ही हम परमेश्वर की योजना में प्रवेश पाते हैं।
   ... अ) सही ... ब) गलत
5. हमारे असफल हो जाने के पश्चात् हम परमेश्वर से सहायता पाने की अपेक्षा नहीं कर सकते।
   ... अ) सही ... ब) गलत
6. विरोध होना हमें यह दिखा सकता है कि हम परमेश्वर की योजना का अनुसरण कर रहे हैं।
   ... अ) सही ... ब) गलत
7. जाँच व परीक्षाएँ हमारे विश्वास की बढ़ती में सहायक हो सकती हैं।
   ... अ) सही ... ब) गलत

एक से अधिक चुनाव

निम्न प्रश्नों में दिए गए उत्तरों में एक उत्तर सही है। सही उत्तर वाले अक्षर पर (✓) चिन्ह लगाएं।

8. हमारे लिए परमेश्वर का सही स्तर यह है कि हम निम्न के समान बनें।
   ... अ) यीशु के शिष्य ... ब) यीशु मसीह
   ... स) आत्मिक लोग जिनकी हम प्रशंसा करते हैं।
9. यह सच्चाई कि यीशु के सब शिष्य एक दूसरे से भिन्न थे निम्न सिद्धांत को बताता है–
   ... अ) ज्ञान ... ब) विविधता ... स) स्तर
10. पौलुस प्रेरित का जीवन हमें दर्शाता है कि–
    ... अ) असफलताएं परमेश्वर की योजना का अनुसरण करने हेतु असंभव नहीं बनाती।

... ब) वे जो कभी असफल नहीं हुए परमेश्वर को प्रसन्न कर सकते हैं।

... स) जो असफल हो गया उस व्यक्ति के लिए बहुत ही कम आशा है।

11. हमारे लिए परमेश्वर की योजना में हम वास्तविक रूप में तब प्रवेश पाते हैं जब–

... अ) परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की आज्ञा पालन करते हैं।

... ब) परमेश्वर हमसे क्या चाहता है इसकी खोज करने से।

... स) परमेश्वर की इच्छा दूसरों को समझाने से।

12. यीशु ने कहा कि उसका दूर चले जाना शिष्यों के लिए अच्छा होगा क्योंकि–

... अ) अन्य विश्वासी उनका और अधिक आदर करेंगे।

... ब) वे उन्हें तुरन्त प्रचार करना आरम्भ करना होगा।

... स) पवित्र आत्मा आएगा कि उनका मार्गदर्शन करे।

13. हम जानते हैं कि परमेश्वर हमारी अगुवाई करना चाहता है क्योंकि–

... अ) उसने हमें पवित्र आत्मा दिया है।

... ब) हम उसको खोजने में ईमानदार हैं।

... स) उसकी इच्छा जानना अत्यन्त कठिन है।

14. रोमियों 12:1-2 कहता है कि हमारा मन परिवर्तन होना चाहिये इसका मतलब है कि हमें चाहिये–

... अ) पूर्ण रूप से बदले हुए।

... ब) जो करना है उसके लिए बताया गया।

... स) अन्य विश्वासियों के समान नहीं।

15. हम परमेश्वर जो चाहता है (अपेक्षाएं) उन्हें पूर्ण करने में समर्थ हैं क्योंकि–

... अ) हम समझ सकते हैं कि वे क्या हैं।

... ब) परमेश्वर की सामर्थ वास्तव में हमसे कार्य करती है।

... स) हमारी शक्ति पूर्ण करने में संभव बनाती है।

16. यिर्मयाह ने कुम्हार के घर जो आत्मिक सबक सीखा वह यह था–
... अ) जहां असफलता होती है, वहां परमेश्वर कार्य करना बंद कर देता है।
... ब) असफलताएं परमेश्वर के अनुग्रह को सीमित करती है।
... स) परमेश्वर का अनुग्रह असफलताओं पर विजय पाता है।

17. परमेश्वर हमारे विश्वास की जांच करता है क्योंकि–
... अ) वह यह जानना चाहता है कि हम उस पर भरोसा करते हैं कि नहीं।
... ब) हमें यह जानने की आवश्यकता है कि हम उस पर कितना भरोसा रखते हैं।
... स) वह यह देखना चाहता है कि कहीं हम बाहरी सहायता पर तो निर्भर नहीं हैं।

18. यीशु ने कठिनाईयों का सामना करने के लिये शिष्यों की अगुवाई की क्योंकि शिष्यों को आवश्यकता थी कि–
... अ) अपनी असफलताओं के लिये दण्ड पायें।
... ब) पूर्ण रूप से यीशु पर निर्भर रहना सीखें।
... स) उसके सामने यह सिद्ध करें कि वे कितने शक्तिशाली हैं।

19. जब हम अपने पापपूर्ण मानवीय स्वभाव के कारण विरोधों का सामना करते हैं तो यह दर्शाता है कि हम परमेश्वर को प्रसन्न करने की कोशिश कर रहे हैं क्योंकि–
... अ) हमारा शरीर उन बातों की अभिलाषा करता है जो संसार देता है।
... ब) संसार उनसे घृणा करता है जो परमेश्वर के हैं।
... स) शरीर व आत्मा एक दूसरे का विरोध करते हैं।

विद्यार्थी जाँच–भाग-2

पाठ 5-8

सही या गलत

निम्नलिखित कथन या तो सही हैं या गलत। सही उत्तर के सामने (✓) चिन्ह लगाएं–

1. बाइबल कहती है कि हम "मसीह में" पवित्र और दोषरहित हैं।
   ... अ) सही ... ब) गलत
2. परमेश्वर "मसीह में" हमारी स्थिति से अधिक हमारे कार्यों को अधिक महत्त्वपूर्ण समझता है।
   ... अ) सही ... ब) गलत
3. परमेश्वर अविश्वासियों के द्वारा हमसे बोल सकता है।
   ... अ) सही ... ब) गलत
4. हमें यह निश्चय हो सकता है कि परमेश्वर हमारी अगुवाई करेगा।
   ... अ) सही ... ब) गलत
5. चूंकि मसीह परमेश्वर का पुत्र था अतः उसे सीखने के लिए मनुष्य जैसे अनुभव से नहीं गुजरना पड़ा।
   ... अ) सही ... ब) गलत
6. परमेश्वर ने भविष्य के विषय कुछ बातें हमें दिखाई हैं।
   ... अ) सही ... ब) गलत
7. कुछ कारण हैं जिन से लोग भविष्य के बारे में जानना चाहता है वे गलत हैं।
   ... अ) सही ... ब) गलत

एक से अधिक चुनाव

प्रत्येक प्रश्न में एक ही उत्तर सही है। सही उत्तर पर (✓) चिन्ह लगाएं।

8. हम पर दृष्टि डालते समय परमेश्वर निम्न में से एक को सबसे प्रमुख स्थान देता है–
   ... अ) हमारे उद्देश्य और व्यवहार।
   ... ब) प्रतिदिन के जीवन में हम कैसा बर्ताव करते हैं।
   ... स) हमारे लिए मसीह का कार्य।
9. हम परमेश्वर की योजना में निम्न में से एक के द्वारा महत्त्वपूर्ण बने रह सकते हैं।
   ... अ) हमें बदलने हेतु उसे निरन्तर अपना कार्य करने देना।
   ... ब) मसीह के कार्य में अपना भाग जोड़ना।
   ... स) आज्ञाकारी के लिए प्रतिक्षारत बने रहना जब तक कि हम अधिक न जान लें।

10. हमें पाप पर विजय मिल सकती है क्योंकि–
... अ) हमारे अन्दर ठीक काम करने की तीव्र इच्छा है।
... ब) मसीह ने हम पर से पाप के अधिकार को तोड़ दिया।
... स) पाप मात्र एक विचार या एक धारणा है।

11. परमेश्वर हमसे अपनी योजना के विषय प्राथमिक रूप से निम्न के द्वारा बोलता है–
... अ) दूसरों की सलाह।
... ब) अगुवों के आदेश।
... स) परमेश्वर के वचन।

12. सम्बन्ध का उदाहरण अधिकार पर आधारित होता है जिसके द्वारा परमेश्वर बोल सकता है कि व्यक्ति को उसका क्या होना चाहिए–
... अ) शासन ... ब) मित्रगण ... स) पड़ौसी

13. जब हम यह कहते हैं कि परमेश्वर अपनी योजना उत्तरोत्तर (प्रगतिशीलता में) हम पर प्रकट करता है तो इसका मतलब है कि अक्सर वह हमें अपनी योजना दिखाता है–
... अ) एक समय में एक कदम।
... ब) जैसा कि यह अन्त में होगी।
... स) सब कुछ एक ही साथ में।

14. बाइबल में यीशु के बाल्यकाल का विवरण दर्शाता है कि–
... अ) परमेश्वर के पूर्णरूपेण प्रसन्न करने के पूर्ण व्यक्ति को पूरी तरह बढ़ा हो जाना चाहिए।
... ब) लोग जो आत्मिक रूप से जागरूक हैं उन्हें किसी भी तरह के मानवीय अधिकार के प्रति झकना नहीं चाहिए।
... स) कभी-कभी सीमाबद्धताएं परमेश्वर की योजना का भाग होती हैं।

15. इब्रानियों 5:8 के अनुसार मसीह ने नियमानुसार आज्ञापालन सीखा–
... अ) विजय ... ब) दुःख सहने ... स) सफलता

16. परीक्षा पर विजय पाने का सबसे अच्छा उदाहरण निम्न अनुभव में वर्णित है–
    ... अ) यह सीखना कि हममें कौन सी कमजोरियां व असफलताएं हैं।
    ... ब) परिस्थितियों के बावजूद परमेश्वर की इच्छा का अनुसरण करना।
    ... स) यह खोज करना कि हम परमेश्वर की इच्छा में कहां चूक गए।

17. परमेश्वर भविष्य की सारी बातें हमें नहीं दिखाता क्योंकि–
    ... अ) भविष्य की घटनाओं के वर्णन सरलता से समझे नहीं जा सकते।
    ... ब) भविष्य की घटनाओं का प्रतिदिन के जीवन जीने में कोई मूल्य नहीं है।
    ... स) हम फिर जल्दबाजी करने लगेंगे या बीच के कदम नहीं उठाना चाहेंगे।

18. परमेश्वर हमें भविष्य की विशेष बातें दिखाता है ताकि हम–
    ... अ) वर्तमान परिस्थितियों का आशा के साथ सामना कर सकें।
    ... ब) यह निर्णय कर सकें कि भविष्य की घटनाएं कैसे घटेंगी।
    ... स) उन कदमों को उठाने से बच सकें जिन्हें हम सोचते हैं कि अनावश्यक हैं।

19. परमेश्वर की इच्छा को पूर्ण करने का सबसे आधारभूत रूप यह है कि–
    ... अ) किस व्यवसाय को चुनें इस बारे में सही निर्णय ले सकें।
    ... ब) प्रतिदिन के लिए परमेश्वर की इच्छा को उसी दिन पूरा करें।
    ... स) भविष्य के प्रकाशन हेतु परमेश्वर पर निर्भर रहें।

यदि आपने यीशु को उद्धारकर्त्ता करके ग्रहण (स्वीकार) किया है तो कृपया संक्षेप में बताइये।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

इन्टरनेशनल कॉरेस्पोन्डेन्स इन्स्टीट्यूट
पोस्ट बैग नं० 1, एन्ड्रूज गंज
नई दिल्ली-110 049

यहाँ से काटकर आई.सी.आई. प्रशिक्षक को भेजिए

निर्णय रिपोर्ट और निवेदन कूपन

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन पूरा करने के बाद ..... मैंने प्रभु यीशु मसीह में अपना उद्धारकर्ता और प्रभु जानकर विश्वास किया है। मैं अपने हस्ताक्षर करके व पता लिखकर यह कूपन लौटा रहा/रही हूँ, जिसके दो कारण हैं। पहिला, मसीह के प्रति अपने समर्पण की साक्षी हूँ, दूसरा अपने आत्मिक जीवन में सहायता पाने हेतु और अध्ययन सामग्री प्राप्त कर सकूँ।

नाम _____

पूरा पता _____

_____

हस्ताक्षर _____

क्या आप जानना चाहेंगे...

- अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजना को मालूम करना?
- यह जानना कि परमेश्वर क्या चाहता है कि आगे मैं क्या करूँ?
- परमेश्वर की योजना के अनुसार अपने जीवन की रूपरेखा बनाना?
- भविष्य का सामना आश्वासन और आत्म-विश्वास के साथ करना?

यदि हाँ, तो 'परमेश्वर की योजना—आपका चुनाव' पुस्तक विशेष रूप से आपके लिए लिखी गई है। जो व्यवहारिक सुझाव इसमें दिए गए हैं उनसे आपको यह जानने में सहायता मिल सकती है कि परमेश्वर अपनी योजना के विषय किस प्रकार बोलता है और उसे आप अपने जीवन में किस प्रकार पूरी कर सकते हैं।

यह पुस्तक दिलचस्प स्वतः शिक्षण प्रणाली का प्रयोग करती है जिससे सीखने में आसानी हो। जब आप इसका अध्ययन करना आरंभ करते हैं तो दिए गए निर्देशों का पालन करते जाइए और फिर स्वयं की जांच कीजिए।

इन्टरनेशनल कारेसपोन्डेन्स इन्स्टीट्यूट
पोस्ट बैग नं. 1, एन्ड्रयूज गंज
नई दिल्ली-110 049